International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 610-611

हरियाणा में धार्मिक जन चेतना : आर्यसमाज का आगाज

कान्ता
इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

19वीं शताब्दी के अन्तिम पड़ाव में जो धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जनक्रांति देश के अंधिकाश हिस्से में फैल रही थी, उसका तीव्र एव द्रुतगामी प्रभाव हरियाणा पर भी बड़ी तेजी से पड़ा। हरियाणा में आर्य समाज रूपी सुधारवादी आंदोलन का संचालन प्रभावपूर्ण एंव निर्देशन बड़े सुलझे हुए हाथो के द्वारा हुआ।[1]

हरियाणा के पिछड़े हुए गांवो में बसने वालों में सर्वप्रथम चेतना लाने का श्रेय आर्य समाज को दिया जाता है।[2] आर्य समाज की स्थापना 10 अप्रैल 1875 को हिन्दू समाज में फैली बुराइयों एवं कुरितियों को दूर करके एक स्वस्थ समाज के निर्माण हेतु बम्बई में हुई थी। इसके निर्माता, उद्भवकर्ता स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824–1883) संस्कृत के एक प्रकाण्ड पण्डित थे। वो एक महान देशभक्त और बहुत बड़े समाज सुधारक थे, जो भारत को अविलम्ब गुलामी की जंजीरो से मुक्त एंव स्वतंत्र देखना चाहते थे।

''विदेशी राज्य कितना ही अच्छा क्यों ना हो, वह कभी भी स्वदेशी राज्य की बराबरी नही कर सकता'' उपरोक्त कथन के आधार पर उन्होंने अपने ग्रंथ ''सत्यार्थ प्रकाश'' में देशवासियों को सबसे पहले स्वराज्य का नारा दिया। उनका कथन था कि प्रत्येक आर्य का कर्तव्य हैं, कि वह अपने देश, तथा अपने स्वराज्य के उत्थान के लिए निरंतर प्रयत्न करे।

आर्य समाज का हरियाणा में प्रसार

स्वामी दयानन्द सरस्वती हरियाणा में सर्वप्रथम 17 जुलाई 1878 को अम्बाला में पधारे, उस समय वे रूड़की (उ0 प्र0) की तरफ प्रचार के सिलसिले में जा रहे थे।[3] यहां पर उन्होने हिंदू समाज में फैली बुराइयों एंव अंधविश्वासों का जोरदार खण्डन किया।

उसके पश्चात क्रमिक रूप से आगे बढ़ते हुए 1880 में वे रेवाड़ी पहुँचे। यहाँ उनका स्वागत अहीर नेता राव युधिष्ठर ने बड़ी गर्मजोशी से किया। स्वामी के विचारों एंव उनकी गूढ़ सोच के चलते राव युधिष्ठर इतने प्रभावित हुए कि वे स्वामी जी के शिष्य बन गए। स्वामी ने यहाँ पर (रैवाड़ी में) 11 व्याख्यान दिए तथा राव युधिष्ठर को प्रेरणा देकर हरियाणा की प्रथम गौशाला की स्थापना करवाई।

करनाल जिले में स्वामी आत्मानन्द जी ने 7 अक्टूबर, 1883. ई0 में आर्य समाज की स्थापना की तथा स्वामी दयानन्द जी के कदमों पर चलते हुए अंधविश्वास एव पाखण्ड का विरोध किया।

रोहतक मे आर्यसमाज की शाखा 1883 में खोली गई। रोहतक में आर्य समाज की दिशा निर्धारण एंव इसे लोकप्रिय बनाने में सर्वाधिक योगदान लाला लाजपतराय का था। लाला जी पंजाब के रहने वाले थे लेकिन अपने पिता जी के तबादले के कारण 1884 में उनको रोहतक आने का अवसर मिला। यहाँ आकर उन्होंने आर्य–समाज के कार्यों में काफी रूचि दिखाईं इसके पश्चात उन्हे रोहतक के आर्य समाज का मंत्री बना दिया गया। आर्य समाज के उत्थान में लाला जी का साथ चौधरी पीरू सिंह, चौधरी कालूराम, तथा चौ0 रणपत सिंह ने बखूबी दिया। इन सभी के प्रयासो से लोगो में नव–चेतना तथा सच्ची धार्मिक भावनाओं का प्रचार हुआ। सभी प्रचारको के साथ लाला जी दूर–दूर तक गाँवो में जाकर सामाजिक कुरितियों के विरूद्ध प्रचार करने लगे। उन्होंने ओजपूर्ण भाषण देकर यहां राजनीतिक जागरण की पृष्ठभूमि भी तैयार की। शीध्र ही रोहतक जिले में यहाँ के लोगो में विशेषकर के जाटो में नवजागरण के लक्षण दिखाई देने लगे। अब यहाँ पर यह प्रश्न उठता है कि आर्य समाज गाँवो में और विशेषकर जाट व कृषक जाति में ही क्यों इतना लोकप्रिय हुआ। क्योकि आर्य समाज द्वारा इन जातियो को ''शुद्ध'' वर्ण से उठाकर क्षत्रिय वर्ण में रखना। जिससे इन वर्णो की सामाजिक उन्नति एंव प्रतिष्ठा बढ़ी। उनमें आर्थिक उन्नति के साथ–साथ सामाजिक हीनता भी कम हुई।[4] 1886 में लाला लाजपत राय रोहतक से हिसार चले गए। तथा आर्य समाज के कार्यो की आगे बढ़ाते हुए एक केन्द्र की स्थापना की तथा लोगो के दिल में आर्य समाज की मशाल जलाई। चंदूलाल जी ने चंहुमुखी विकास की ओर कदम बढ़ाते हुए आर्य समाज को प्रत्येक नगरीय व ग्रामीण इलाको से लेकर जन–जन तक इसकी पैठ बनाने मे सफलता प्राप्त की। इस प्रकार इसी क्रम में डॉ0 रामजीलाल, पंडित लखपत राय, बाबू चूड़ामणी, हीरालाल, डॉ0 धनीचंद, पं0 अमीरचंद तथा बालमुकुंद आदि ने भी हिसार में आर्य समाज के प्रचार प्रसार में काफी योगदान दिया।

प्रसिद्ध लेखक एम.एम.जुनेजा के अनुसार

''इन सभी के अथक एंव निस्वार्थ प्रयासो से हिसार समाज प्रांत में सबसे आगे व मजबूत बना। इस्से आर्य समाज के सिद्धातों के प्रसार मे जो सफलता प्राप्त की वह हिसार, रोहतक, दिल्ली, क्षैत्र की हिंदू जनता में काफी महान भी।[5] 1886 में पंडित लेखराज के प्रयासो से जगाधारी में आर्य समाज की शाखा खोली गई। 1890 में भिवानी में आर्य समाज की स्थापना हुई। नीचे एक तालिका बनाकर हम आर्य समाज की हरियाणा में विस्तृता को जान सकते है।[6]

	स्थापना तिथी	शहरी गाँव	सदस्य संख्या
1	1880	रेवाड़ी	21
2	1885	रोहतक	10
3	1886	हिसार	59
4	1889	हांसी	12
5	1890	भिवानी	36
6	1890	हथीन (गुडगाँव)	5
7	1890	अम्बाला शहर	14
8	1891	झज्जर	13
9	1892	सिरसा	21
10	1893	शाहबाद (कुरूक्षैत्र)	19
11	1894	थानेसर	15
12	1896	वल्लभगढ (फरीदाबाद)	10
13	1897	कोसली (रेवाड़ी)	10
14	1900	लाडवा (कुरूक्षैत्र)	8
15		कैथल (कुरूक्षैत्र)	30
16		पुंडरी (कुरूक्षैत्र)	20

हरियाणा में लोकप्रियता

''सम्भवता आर्य समाज का अन्य भागो यहां तक कि पंजाब की अपेक्षा हरियाणा में अधिक मजबूती से प्रसार हुआ''[7] हरियाणा में आर्य समाज की अधिक लोकप्रियता के कारण भिन्न थेः–

1. हरियाणा के लोग अधिकाशतः ग्रामीण थे। वे बहुत ही सरल व सीधे स्वभाव के थे। अतः उनके मन पर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षाओ का जादुई प्रभाव पड़ा।
2. आर्य समाज ने मुख्य रूप से हरियाणा की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन लाने में उल्लेखनीय योगदान दिया क्योंकि पहले यहां जाट, अहीर, सैनी एंव गुर्जर आदि शुद्ध श्रेणी में आते थे, आर्य समाज ने उनको उच्च जातियो की श्रेणी रखकर सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ाई।
3. हरियाणा में कृषक जातियो में जाटो की बहुलता होने के कारण वे स्वामी जी द्वारा 11 वे समुल्लास में दी गई जाटो की कहानी से बहुत प्रभावित हुए तथा बड़ी मात्रा में आर्य समाज की तरफ अग्रसर हुए।
4. हरियाणा के ब्राहमण भी भारत के अन्य भागो की तरह अधिक रूढ़िवादी नही थे। वे अतः वे स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओ से बहुत प्रभावित हुए।
5. हरियाणा के अधिकांश लोग शाकाहारी थे, वे गौमाता का बहुत अधिक सम्मान करते थे। स्वामी जी द्वारा मांस से दूर रहने, तथा गौधन की उपयोगिता बताने से लोगो के मनो पर बहुत गहरा प्रभ्ज्ञाव हुआ।
6. हरियाण में आर्य समाज को लोकप्रिय बनाने में लाला लाजपत राय, प0 लखमीचन्द, लाला चुड़ामणी आदि महान नेताओ ने स्वामी जी का कंधे से कंधा मिलाकर भरपूर सहयोग किया।

हरियाणा में आर्य समाज की सफलताए

1. धार्मिक क्षैत्र में इन्होने ईश्वर की एकता पर बल दिया तथा मूर्तिपूजा का जोरदार शब्दो में खण्डन करते हुए पुनः "वेदो की ओर लोटो" का नारा दिया। शुद्धि प्रथा से लोगो को वापस धर्म में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ।
2. सामाजिक क्षैत्र में उन्होने स्त्रियो का सम्मान करते हुए पुरूषो के बराबर अधिकार प्रदान किए। सती व दहेजप्रथा जैसी कुरीतियो का विरोध करते हुए स्त्रियो में जागृति लाने के उद्देश्य से उन्हे शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया।
3. शिक्षा के क्षैत्र में सर्वप्रथम 1900 ई0 में गुजंरावाला में प्रथम गुरूकुल की स्थापना की। इसे 1902 में गुरूकुल कांगडी (हरिद्वार) में स्थान्तरित कर दिया गया। कुरूक्षैत्र में 1911 में गुरूकुल में की स्थापना की। हरियाणा में प्रथम कन्या गुरूकुल 1936 ई0 खानपुर कंला (सोनीपत) में भगत फूल सिंह द्वारा स्थापित किया गया। इनके अतिरिक्त हरियाणा में डी.ए.वी. स्कूलो, एंव कॉलेजो की स्थापना भी आर्य समाज द्वारा की गई। इनमें भारतीय एंव पाश्चात्य दोनो प्रकार की शिक्षा दी जाती है।[8]

निष्कर्ष

हम कह सकते है, कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने न केवल हरियाणा अपितु सर्म्पूण भारतीय समाज को आर्य समाज द्वारा एक नयी दिशा देने में उल्लेखनीय योगदान दिया, इसी धार्मिक चेतना के द्वारा हरियाणा समाज की जो रोशनी 'मद्धम पड़ गई थी, पुनः प्रकाशमान हो उठी।

सन्दर्भ सूची

1. देवीशंकर प्रभाकर, स्वाधीनता संग्राम और हरियाणा एक एतिहासिक अध्ययन, उमेश प्रकाशन, नयी दिल्ली, नवम्बर 1976 पृष्ठ–134.
2. के. सी. यादव, हरियाणा इतिहास एंव संस्कृति, मनोहर पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नयी दिल्ली. पृष्ठ–162
3. प्रौ. मंजीत सिंह सोढ़ी, हिस्ट्री ऑफ हरियाणा, मॉर्डन पब्लिशर, जालंधर, पृष्ठ–161.
4. वहीं, पृष्ठ–2
5. एम.एम. जुनेजा, हिस्ट्री ऑफ हिसार "फ्रॉम इनसेप्लन एण्ड इन्डिपेन्डस (1354–1947), हिसार (1986), पृष्ठ– 87–88.
6. के.सी. यादव, पृष्ठ–165.
7. डॉ0 एस.सी. मितल, हरियाणा ए हिस्ट्रीरिकल परस्पेक्टिव (नयी दिल्ली, 1986), पृष्ठ–66.
8. प्रौ0 मंजीत सिंह, पृष्ठ–165.